Dr. Priti Ranjan
H.D. Jain college
Deptt of History

B.A Part-I
Paper-2
Topic-Europe ke deshi ki samasya

पूर्वी समस्या (पूर्वी समस्या) से आप क्या समझते इसके संदर्भ में विभिन्न यूरोपीय देशों के स्वार्थ … करें ?

डा० मिलर के अनुसार — "यूरोप में तुर्की सम्राज्य का पतन तथा उसका स्थान लेने की समस्या को ही निकट पूर्वी समस्या की संज्ञा दी गई।"

आधुनिक यूरोप के इतिहास में 19 वीं सदी में सबसे बड़ी समस्या पूर्वी समस्या थी। यह समस्या यूरोप में तुर्की सम्राज्य का क्रमिक पतन, रूस का विस्तारवादी कार्यक्रम, आस्ट्रीया द्वारा अपने आप को बचाने का अंतिम प्रयास, इंग्लैण्ड को अपने उपनिवेशो की ओर जाने वाली रास्ते को बंद करने का प्रयासो का एक सम्मिलत परिणाम था।

कुस्तुनतुनिया

1453 में रोमन सम्राज्य की राजधानी कुस्तुन्तुनिया पर तुर्कों का अधिकार हो जाने के बाद बाल्कन प्रायद्वीप का बहुत बड़ा भाग तुर्की सम्राज्य में आ गया। अतः अब तुर्की के विशाल सम्राज्य में विभिन्न भाषा भाषी एवं जाति के लोग रहने लगे। आरंभ में तुर्की सुल्तान ने अपने विशाल सेना की सहायता से इन पर अपना नियंत्रण बनाए रखा लेकिन कुछ समय बाद अनेक कारणों को लेकर बाल्कन प्रायद्वीप के राज्यों ने तुर्क सम्राज्य के खिलाफ में आंदोलन शुरु कर दिया और इस प्रकार तुर्की सम्राज्य के पतन की प्रक्रिया यहाँ से शुरु हुई। 1699 के शांति समझौता से ही तुर्की सम्राज्य का विघटन आरंभ हो गया।

तुर्की सम्राज्य के पतन के अन्य भी कई कारण थे :-

पश्चिमी यूरोप में तीव्र औद्योगीकरण, आधुनिकीकरण और राष्ट्रीयता का प्रसार — तुर्की सम्राज्य ने यद्यपि आधुनिकरण की कोशिश की थी, लेकिन वह बहुत हद तक अपने प्रयास में सफल नहीं रहा। जिसके कारण तुर्की सम्राज्य का पतन होने लगा। दूसरा कारण था

* फ्रांसीसी क्रांति का सिद्धांत इस सिद्धांत ने तुर्की सम्राज्य में पहुँचकर हलचल मचा दी, विभिन्न

जातियां अपनी स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए आंदोलन करने लगीं। तिसरा कारण था * सर्बिया की सफलता बाल्कन प्रायद्वीप में सर्वप्रथम स्वाधीनता संग्राम 1804 में सर्बिया से प्रारंभ हुआ। और इस संग्राम में सर्बिया को सफलता मिली। जिससे बाल्कन प्रायद्वीप के अन्य राज्यों को प्रेरणा मिली और उन्होंने भी सुल्तान के विरोध में आंदोलन शुरु कर दिया।

इस प्रकार से लगभग सम्पूर्ण बाल्कन प्रायद्वीप में आंदोलन शुरु हो गया, तुर्की अब यूरोप का मरीज बन चुका था। अब यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न था कि तुर्की साम्राज्य के पतन के बाद यूरोपीय प्रदेशों का उत्तराधिकारी कौन बनेगा? इस बात को लेकर जो समस्या हुई उसको पूर्वी समस्या कहा गया। इस समस्या से मुख्यतः इन यूरोपीय देशों के हित संबंधित थे।

रूस का स्वार्थ :-

रूस तुर्की साम्राज्य में दिलचस्पी रखता था क्योंकि इसमें उसका अपना धार्मिक जातिय एवं राजनीतिक स्वार्थ था। चूँकि रूस एक स्लाव देश था तथा तुर्की सुल्तान के अधीन बाल्कन प्रायद्वीप में बहुत स्लाव थे, जिन्हें रूस अपने राज्य में शामिल करना चाहता था। वह कुस्तुनतुनीया पर भी अधिकार करना चाहता था। एक शक्तिशाली पश्चिमी राष्ट्र बनने के लिए रूस के लिए आवश्यक था कि उसका नियंत्रण भूमध्य सागर पर हो परंतु तुर्की के कारण यह संभव नहीं था। अतः वह 'यूरोप के मरीज' का विनाश चाहता था. इसके लिए वह तुर्क सुल्तान के विरोध में बाल्कन प्रायद्वीप की इसाई जनता को उकसाता रहा। सर्बिया का स्वाधीनता संग्राम तथा यूनानी स्वतंत्रता संग्राम बाल्कन प्रायद्वीप में रूस के बढ़ते हुए प्रभाव को स्पष्ट करता है। जिसका अंत क्रिमीया की युद्ध में उसकी पराजय के साथ होता था।

आस्ट्रिया का स्वार्थ :

रूस की तरह आस्ट्रिया भी तुर्की साम्राज्य में दिलचस्पी रखता था। आस्ट्रिया के साम्राज्य विस्तार भी तुर्की के यूरोपीय प्रदेशों की ओर ही हो सकता था। साथ ही वह काला सागर तक पहुंचने का एक सुरक्षित मार्ग भी चाहता था। इसके अतिरिक्त आस्ट्रिया साम्राज्य में काफी स्लाव जाति के लोग थे। अतः आस्ट्रिया को यह भय था कि बाल्कन प्रायद्वीप में रूस का प्रभाव हो जाने से उसके साम्राज्य के स्लाव जाति के लोग रूस के अधीन होने की चेष्टा करेंगे। इस दृष्टि से आस्ट्रिया रूस के प्रसार नीति का विरोधी था।

अतः आस्ट्रिया और रूस के पारस्परिक हित बाल्कन प्रायद्वीप में बराबर टकराते रहे।

इंग्लैण्ड का स्वार्थ :-

पहले इंग्लैण्ड ने तुर्की का महत्व नहीं समझा था लेकिन जब नेपोलियन ने मिस्र पर हमला किया तो अंग्रेजो को इस क्षेत्र के प्रभाव का मूल्य समझ में आया। ~~अब~~ इंग्लैण्ड रूस के दक्षिण में (भूमध्य सागर) विस्तार से डरता था क्योंकि उसको भय था कि कहीं रूस खैबर के दर्रे के रास्ते उसके उपनिवेश भारत में न घुस जाए, इसलिए इंग्लैण्ड रूस के विस्तारवादी नीति का विरोध कर रहा था। अतः इंग्लैण्ड के विदेश मंत्री का विचार था कि 'यूरोप के मरीज' तुर्की की विशेष सेवा सुश्रुषा की जाय ताकि वह जीवित रहे और रूस के प्रसार का विरोध कर सके। जब-2 पूर्वी समस्या को लेकर युद्ध छीड़े इंग्लैण्ड ने अपनी इस विशिष्ट नीति का पालन किया।

फ्रांस का स्वार्थ :-

फ्रांस की दृष्टि में टर्की की समस्या का आर्थिक तथा राजनीतिक महत्व था। इसलिए उसने पूर्वी समस्या में रुची लेना प्रारंभ कर दिया। फ्रांस का तुर्की साम्राज्य के साथ व्यापारीक संबंध था इसलिए वह तुर्की साम्राज्य को अक्षुण्ण बनाए रखना चाहता था। रूस अपने को टर्की के ~~साम्राज्य~~ इसायो का संरक्षक अवश्य समझता था परंतु टर्की के इसायो

के साथ जो हो रहा था उससे रूस ने आखें बन्द कर ली थी। वैसे तो फ्रांस टर्की के साथ व्यापारिक संबंध बनाए रखने का इच्छुक था। परंतु क्रिमीया के युद्ध के समय फ्रांस के सम्राट नेपोलियन III ने अपने देश के गौरव को बढ़ाने के उद्देश्य से सक्रिया भाग लिया और इस प्रकार फ्रांस भी इस समस्या में रूची लेने लगा।

जर्मनी का स्वार्थ :

जर्मनी में अपनी ही इतनी समस्याए थी कि उसे किसी ओर ध्यान देने का समय ही नहीं था। उसने रूस के प्रभाव की वृद्धि को रोकने के उद्देश्य से आस्ट्रीया के साथ मित्रता कर ली। उसने टर्की के सुलतान के साथ भी मैत्री की। टर्की के सुलतान ने जर्मनी से बर्लिन से बगदाद की रेलवे लाइन बनाने की आज्ञा दे दी। इसके अतिरिक्त जर्मनी के सैनिक अधिकारीयों ने टर्की के सैनिको को प्रशिक्षण भी देना शुरु किया और इस तरह जर्मनी टर्की की समस्या में रूची लेने लगा।

निष्कर्ष

यूरोपीय देशों की दिलचस्पी ने पूर्वी समस्या को काफी जटील बना दिया। पूर्वी समस्या के अंतरगत तीन और महत्वपूर्ण घटनाए थी – (a) क्रिमीया का युद्ध 1853 (b) पेरिस की संधि 30 March 1856 तथा (c) बर्लिन सम्मेलन – 1878। इन घटनाओं के निर्णयो ने पूर्वी समस्या की उलझनों को और बढ़ाया क्योंकि उसमें विविध समस्याओं का असल निदान नहीं खोजा गया। पूर्वी समस्या का निदान प्रथम तथा द्वितीय बाल्कन युद्ध के बाद ही हुआ लेकिन इस समय एक नई समस्या अनिवार्य बन चुकी थी, वह था 'महायुद्ध'।